कलम का सौदा

हिन्दी साप्ताहिक

राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार से विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

www.kksnews.com

वर्ष 16 अंक 40 हरिद्वार 23 मई 2022 डाक पंजीयन संख्या: UA/DO/DDN/275/2015-2017 R.N.I. No. UTTHIN/2006/17725 मूल्य 1रुपया पृष्ठ 4

केदारनाथ पहुंच रहे 20 प्रतिशत मरीज हाइपोथर्मिया से पीड़ित

◆ 4600 श्रद्धालुओं का किया उपचार

रुद्रप्रयाग (संवाददाता)। केदारनाथ धाम में सबसे अधिक श्रद्धालु हाइपोथर्मिया से पीड़ित हो रहे हैं। मरीजों में 20 प्रतिशत हाइपोथर्मिया से पीड़ित हैं। अब तक धाम में हाइपोथर्मिया पीड़ित 4600 श्रद्धालुओं का उपचार किया जा चुका है। जबकि, गंभीर रूप से बीमार 350 श्रद्धालुओं की एयरलिफ्ट कर जान बचाई गई।

इस बार केदारनाथ धाम समेत पैदल मार्ग पर स्वास्थ्य सेवाएं काफी दुरुस्त हैं। पैदल मार्ग पर 11 मेडिकल रिलीफ पोस्ट (एमआरपी) स्वास्थ्य विभाग ने स्थापित किए हैं। इनमें जीवन रक्षक दवाइयों के अलावा आक्सीजन सिलिंडर भी रखे गए हैं।

पैदल मार्ग पर रोजाना लगभग 400 और धाम में लगभग 800 मरीजों का उपचार हो रहा है। केदारनाथ में स्वास्थ्य सेवाएं देख रहे सिक्स सिग्मा के प्रभारी डा. प्रदीप भारद्वाज ने बताया कि सबसे अधिक व्यक्ति केदारनाथ में हाइपोथर्मिया पीड़ि?त हो रहे हैं। इनमें लगभग 20 प्रतिशत तो ठंड लगने से बीमार हो रहे हैं। इनका वार्म रूप में उपचार किया जा रहा है। इसके अलावा कइयों को उल्टी, चक्कर, बदन दर्द व बेचैनी की शिकायत भी हो रही है।

बताया कि आक्सीजन की कमी की शिकायत तीन से पांच प्रतिशत श्रद्धालुओं में ही देखने को मिल रही है।

रुद्रप्रयाग के मुख्य चिकित्साधिकारी डा. बीके शुक्ला ने बताया कि केदारनाथ में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर की गई हैं। पैदल मार्ग पर भी एमआरपी में श्रद्धालुओं का उपचार हो रहा है। जबकि, गंभीर रोगियों को लगातार एयरलिफ्ट किया जा रहा है।

क्या है हाइपोथर्मिया

उच्च हिमालयी क्षेत्र में बारिश में भीगने के कारण शरीर का तापमान एकदम कम हो जाता है और गर्म कपड़े पहनने व कंबल ओढ़ने के बावजूद कंपकंपी नहीं जाती। ऐसे में पूरा शरीर नीला पड़ जाता है और आक्सीजन लेबल भी घटने लगता है। नतीजा हृदयाघात का खतरा बढ़ जाता है।

केदारपुरी जाने से पहले पड़ाव स्थलों पर एक-दो दिन रात्रि विश्राम अवश्य करें। इससे शरीर स्वयं को उच्च हिमालयी भूगोल के अनुरूप ढाल लेगा। गर्म कपड़े पहनें और बारिश में भीगने से बचें।

फिर भी अगर बारिश में भीग गए हों तो तुरंत गीले कपड़े उतार कर गर्म कपड़े पहन लें। इसके अलावा गर्म भोजन करें और पानी भी गर्म ही पिएं। अपने साथ जरूरी दवाइयां भी रखें।

केदारनाथ की पैदल यात्रा करते श्रद्धालु ।

पति ने पत्नी की गला दबाकर की हत्या, गिरफ्तार

देहरादून (संवाददाता)। पटेलनगर कोतवाली क्षेत्र में एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी की गला दबाकर हत्या कर ली। वारदात को अंजाम देने के बाद सुबह वह खुद चौकी पहुंच गया और अपना गुनाह कबूल लिया। पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। बताया जा रहा है कि किसी और से बात करने के शक में उसने वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने आरोपी को कोर्ट में पेश कर जेल भेज दिया है।

जानकारी के मुताबिक, शनिवार सुबह करीब सात बजे चंगेज खान (48) निवासी हरभजवाला आईएसबीटी पुलिस चौकी पहुंचा। पुलिस को बताया कि शुक्रवार रात उसने अपनी पत्नी सवाना की गला दबाकर हत्या कर दी। यह सुनते ही पुलिस के हाथ-पांव फूल गए। पटेलनगर कोतवाली के इंस्पेक्टर रविंद्र यादव, एसएसआई कुंदन राम और चौकी प्रभारी ओमबीर सिंह के साथ मौके पर पहुंचे। वहां चंगेज खान की पत्नी मृत अवस्था में पड़ी मिली।

सूचना पर पहुंची फॉरेसिंक टीम ने भी छानबीन कर सुबूत जुटाए। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए कोरोनेशन अस्पताल भेज दिया। साथ ही आरोपी पति को गिरफ्तार कर उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया। इंस्पेक्टर रविंद्र यादव के अनुसार, आरोपी ने पूछताछ में बताया कि उसकी हरभजवाला में चाय की दुकान है। उसकी पत्नी सवाना मोबाइल पर ऑलनलाइन लूडो खेलती थी। खेलते समय वह किसी अनजान व्यक्ति से ऑनलाइन बात भी करती थी। इसे लेकर कई दिनों से दोनों का विवाद चल रहा था। आरोपी के मुताबिक, बार-बार मना करने पर भी पत्नी ने न तो गेम खेलना छोड़ा और न ही उससे बात करनी बंद की। शुक्रवार रात को भी वह गेम खेलते हुए ऑनलाइन बात कर रही थी। इसे लेकर दोनों के बीच पहले विवाद हुआ। इस बीच उसने आक्रोश में आकर पत्नी की गला दबाकर हत्या कर दी।

इंस्पेक्टर ने बताया कि आरोपी के तीन बच्चे भी हैं। मौके से दोनों के मोबाइल भी कब्जे में लिए गए हैं। आरोपी ने पत्नी की हत्या के बाद देर रात तक किसी को कुछ नहीं बताया, लेकिन सुबह पुलिस चौकी आने से पहले सभी रिश्तेदारों को भी बता दिया कि उसने पत्नी की हत्या कर दी है। घटना को लेकर सभी रिश्तेदार स्तब्ध हैं।

वीकेंड पर मसूरी उमड़े पर्यटक, माल रोड पर बढ़ी रौनक

मसूरी (संवाददाता)। वीकेंड पर उत्तराखंड के पर्यटक स्थल गुलजार हैं।

विशेषकर पहाड़ों की रानी मसूरी। यहां सैलानियों का सैलाब उमड़ पड़ा है। यहां दिनभर जाम के हालात बने रहे। होटल और गेस्ट हाउस में 80 प्रतिशत की आक्यूपेंसी हो चुकी है।

पहाड़ों की रानी मसूरी में करीब 350 होटल, गेस्ट हाउस और होम स्टे हैं। इन में आठ हजार कमरों के साथ करीब 25 हजार व्यक्तियों के ठहरने की क्षमता है। आज शनिवार को मसूरी के सभी होटल पैक होने के बाद भी पर्यटकों की आमद जारी रही। बड़ी संख्या में ऐसे पर्यटक थे, जिन्होंने प्री बुकिंग नहीं कराई थी।

तीन दिनों की छुट्टी होने से मसूरी उमड़े पर्यटक

मई महीने के दूसरे शनिवार, रविवार व सोमवार को लगातार तीन दिनों की छुट्टी होने से पर्यटक मसूरी उमड़े। इससे यहां के पिकनिक स्पाट और माल रोड पर रौनक बढ़ गई। बीते दो साल मसूरी का ग्रीष्मकालीन पर्यटन सीजन कोविड की भेंट चढ़ गया था। इस वर्ष कोविड से राहत है। इस कारण पर्यटक उत?तराखंड के हिल स्टेशन आ रहे हैं।शहर के नेक प्वाइंट और व्यस्ततम चौराहों पर जाम लगा रहा। वहीं, शाम तक होटल, गेस्ट हाउस में 90 प्रतिशत आक्यूपेंसी हो चुकी थी। मसूरी के समीपवर्ती धनोल्टी, कानाताल, बुरांशखंडा और कैम्पटी फाल क्षेत्रों के होटल, गेस्ट हाउस में भी पर्यटकों की बुकिंग हुई है।

मसूरी रहा है हमेशा से ही पर्यटकों की पहली पसंद

पहाड़ों की रानी मसूरी हमेशा से ही पर्यटकों की पहली पसंद रहा है। यह ऐसा प्रसिद्ध हिल स्टेशन है, जहां का पर्यटक बड़ी संख्या में वीकेंड पर रुख करते हैं। इस वीकेंड भी शनिवार सुबह से ही काफी संख्या में पर्यटक मसूरी पहुंचे। माल रोड पर पर्यटक देर रात तक सैर करते रहे।

कारोबारियों के खिले चेहरे

वीकेंड पर मसूरी में खूब पर्यटक उमड़े, जिससे पर्यटन कारोबारियों के चेहरे खिल उठे।

सम्पादकीय

जलाने पर मजबूर

खेत के लिए पानी खेत से ही आए, ऐसी नीति अब देश में बननी चहिए। खेत के लिए पानी खेत से ही आए, ऐसी नीति अब देश में बननी चहिए। विश्व जल दिवस पर केंद्र सरकार ने वर्षा जल की बूंद–बूंद सहेजने की योजना बनाई थी। 'कैच द रेन' कार्यक्रम के अंतर्गत देश के प्रत्येक जिले में वर्षा जल केंद्रों के माध्यम से वर्षा जल संरक्षण हेतु जन–जागरण अभियान चलाना था। लेकिन राज्य सरकारों ने इसमें दिलचस्पी नहीं दिखाई।साठ के दशक में भारत भीषण अकाल की चपेट में था। तब 1965–66 में कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन ने देश में हरित क्रांति का आगाज किया था। उस समय का अशिक्षित किसान नई तकनीक अपनाने के लिए सरकार के साथ कंधे से कंधा मिला कर जुट गया था। देखते ही देखते भारत में अनाज उत्पादन की तस्वीर बदलने लगी। लेकिन अधिक उत्पादन की चाह में किसान रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का बेहताशा इस्तेमाल करने लगे। अब हालात इतने गंभीर हो गए हैं कि खेती में रसायन एवं कीटनाशकों के प्रयोग की मात्रा तय करने की चेतावनी दी जा रही है। कृषि वैज्ञानिक खेती पर इनके नुकसानों को लेकर लगातार आगाह कर रहे हैं और प्राकृतिक खेती पर जोर दिया जा रहा है।आज सबसे बड़ी जरूरत इस बात की है कि रासायनिक उर्वरकों के सीमित प्रयोग के बारे में किसानों को समझाया कैसे जाए। तकनीकी ज्ञान के अभाव में देश का किसान रासायनिक उर्वरक और पानी के अत्यधिक प्रयोग को उत्पादन बढ़ाने वाला एकमात्र संसाधन मान बैठा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के हद से ज्यादा इस्तेमाल से खेत बंजर होते जा रहे हैं। जल स्रोत जहरीले हो रहे हैं। पंजाब जैसे राज्यों के किसान रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशको के प्रयोग से कैंसर और श्वास रोग की पीड़ा झेलने को मजबूर हैं। विकसित देशों की तुलना में भारत में रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग की मात्रा भले ही कम है, लेकिन देश की मिट्टी और इंसानी सेहत के सामने खतरा तो बढ़ता ही जा रहा है।छोटे और सीमांत किसानों, जिनकी आबादी अस्सी फीसद से ज्यादा है, के लिए रासायनिक खेती लाभकारी नहीं है। फसल अवशेषों धान की पराली और गेहूं की नरवाई को खेत की मिट्टी में मिला कर जमीन की सेहत सुधारी जा सकती है। लेकिन केंद्र सहित राज्य सरकारें किसानों को न तो पराली जलाने से रोक पाती हैं और न ही इसे जैविक खाद के रूप में उपयोग करवा पाती हैं। देश के खेतों से निकलने वाले फसल अवशेषों की मात्रा लगभग पैंसठ करोड़ टन है। लेकिन इसे मिट्टी में मिलाने की लागत थोड़ी अधिक होने से उत्पादक किसान इसके झमेले में पड़ना नहीं चाहते, क्योंकि बाजार में उपलब्ध रासायनिक खाद उन्हें सस्ती मिल जाती है। दूसरी तरफ किसानों के पास बड़े यांत्रिक संसाधन नहीं हैं। नई फसल बुआई में मौसमी अनुकूलता की अवधि कम है। इसलिए न चाहते हुए भी देश का किसान फसल अवशेषों को जलाने पर मजबूर होता है। इस समस्या का समाधान यही है कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने के काम आने वाली यांत्रिक मशीनों को सरकार किसानों को इन्हें रियायती दरों पर मुहैया करवाए।

जन्मदाताओं की उपेक्षाएँ कभी न करें

विद्यावाचस्पति

मेरी माँ श्रीमती समुंद्री बाई जैन के प्रति विनम्र श्रन्धांजलि .मुझे इस बात का बहुत दु:ख हैं की मैं अपने माता- पिता की मृत्यु के समय नौकरी के कारण समय पर उपस्थित न होकर, कोई सेवा नहीं कर पाया था .

इस हेतु मृत आत्माओं से उत्तम क्षमा भाव रखते हुए ,सभी जनों से निवेदन हैं की हमारे जन्मदाताओं की उपेक्षाएँ कभी न करे .यह बहुत बड़ा अपराध बोध होता हैं जिसकी कसक जिंदगी भर रहती हैं .माँ बाप की सेवा ईश्वर सेवा से भी बढ़कर होती हैं .

मदर्स डे को यूरोप में मदरिंग संडे भी कहा जाता है मदर्स डे को यूरोप में मदरिंग संडे भी कहा जाता है

मदर्स डे को मां का दिन कहा जाता है. ये दिन मई के दूसरे रविवार को मनाया जाता है. इस साल ये खास दिन 8 मई को सेलिब्रेट किया जायेगा. वैसे तो साल का हर दिन मां के नाम होता है लेकिन खासतौर पर इस दिन लोग अपनी मां को स्पेशल फील कराने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं. वहीं आजकल शहरों से लेकर गांवों तक लगभग सभी जगह लोग अपने-अपने अंदाज में मदर्स डे मनाते हैं.

जिंदगी के कई रिश्तों के बीच मां के साथ एक बच्चे का सबसे खास रिश्ता होता है. बच्चे को जन्म देने से लेकर हर सुख और दुख में मां ही है, जो हमेशा बच्चे के साथ खड़ी मिलती है.

वैसे तो किसी के लिए भी लाइफ में मां की अहमियत को शब्दों में बयान कर पाना काफी मुश्किल होता है. बावजूद इसके साल का एक दिन मातृत्व के महत्व को सौंप दिया जाता है, जिसे हम मदर्स डे के रूप में मनाते हैं. इस साल मदर्स डे 8 मई को मनाया जायेगा.

मई महीने के दूसरे रविवार को भारत सहित दुनिया के कई देशों में मदर्स डे मनाया जाता है. हालांकि, किसी एक दिन को मां के नाम करना काफी नहीं होता है. मगर, सोशल मीडिया और इंटरनेट के इस दौर में मदर्स डे मनाने का प्रचलन काफी बढ़ गया है. जिसके चलते कई लोग मदर्स डे काफी धूमधाम से मनाते हैं.

मदर्स डे की शुरूआत एना जॉर्विस नाम की एक अमेरिकन महिला ने की थी. दरअसल, एना का अपनी मां के तरफबेहद खास लगाव था.

एना अपनी मां से काफी ज्यादा इंस्पायर हुआ करतीं थीं. हालांकि, बाद में अपनी मां की मृत्यु के बाद एना ने शादी न करने का फैसला लेते हुए अपना जीवन अपनी मां के नाम करने का संकल्प लिया. इसी कड़ी में अपनी मां को सम्मान देने के लिए एना ने मदर्स डे की शुरूआत की. इसीलिए ईसाई समुदाय के कई लोग इस दिन को वर्जिन मेरी के नाम से भी पुकारते हैं. वहीं यूरोप में इसे मदरिंग संडे कहा जाता है.

मई के दूसरे रविवार को क्यों मनाते हैं

एना जॉर्विस ने मदर्स डे की नींव जरूर रखी लेकिन औपचारिक रूप से मदर्स डे की शुरूआत 9 मई 1914 को अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन ने की थी. इस दौरान अमेरिकी संसद में कानून पास कर हर साल मई महीने के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाने का एलान किया गया. तब से अमेरिका, यूरोप और भारत सहित कई जगहों पर मदर्स डे मनाया जाने लगा. वहीं दुनिया के कई देशों में मदर्स डे मार्च महीने में भी मनाया जाता है.

मदर्स डे का महत्व

मां के महत्त्व को समझते हुए मदर्स डे का सेलिब्रेशन हर कोई अपने अनोखे अंदाज में करता है. खासकर भारत में बच्चे अपनी मां को स्पेशल फील कराने के लिए कुछ न कुछ खास करने का प्लान जरूर बनाते हैं. कुछ लोग इस दिन मां को घर के कामों से छुट्टी देकर बाहर घूमने के लिए भेजते हैं, तो कुछ लोग मां को उनका फेवरेट तोहफा या ग्रीटिंग्स देकर मदर्स डे विश करते हैं. वहीं सोशल मीडिया पर भी मदर्स डे के कई सारे कोट्स शेयर किए जाते हैं.

मौत के लिए बहुत रास्ते हैं पर,जन्म लेने के लिए केवल माँ है.. !!

एक ऐसा डॉक्टर जिसे डिग्री की जरुरत नहीं होती, वो है माँ.. !! हैप्पी मदर्स डे

ऐ अँधेरे देख ले मुँह तेरा काला हो गया,माँ ने आँखें खोल दीं घर में उजाला हो गया.. !!

सबने बताया कि आज मां का दिन है,कौन बताएगा कि वो कौन सा दिन है जो मां के बिन है.. !!

जिस घर में ?माँ? की कदर नहीं होती,उस घर में कभी बरकत नहीं होती.. !! हैप्पी मदर्स डे

माँ बाप का दिल जीत लो कामयाब हो जाओगे, वरना सारी दुनिया जीत कर भी हार जाओगे.. !!

कोई कहता है अच्छे से जाना, कोई कहता है खाना टाइम पर खाना, एक माँ ही है मेरी जो कहती है कि बेटा जल्दी से घर आ जाना.. !!

मेरी ख्वाहिश है की मैं फिर से फरिश्ता हो जाऊँ, माँ से इस तरह लिपटूँ की बच्चा हो जाऊँ.. !! हैप्पी मदर्स डे

माँ के लिए क्या शेर लिखूं, माँ ने मुझे खुद शेर बनाया है.. !!

सूक्ति

यदि तुम्हारे हृदय के तार मुझसे जुड़ गए हैं तो अनंतककाल तक आवाज देता रहूँगा।

– **आचार्य रजनीश**

नर हो न निराश करो मन को। कुछ काम करो, कुछ काम करो। जग में रहकर कुछ नाम करो ?

– **मैथिलीशरण गुप्त**

बस्तियों में पानी की किल्लत

हरिशंकर व्यास

गर्मी के मौसम के साथ देश के अलग-अलग हिस्सों से जल संकट की खबरें सामने आने लगती हैं। इस बार भी ऐसा ही हो रहा है। राजस्थान के कोटा शहर का उदाहरण ही लें। यह शहर चंबल नदी के किनारे बसा है। लेकिन इस शहर की अनेक बस्तियों में पानी की किल्लत हो गई है। स्थिति यह है कि कई बस्तियों में तो नलों से बूंद-बूंद टपकने वाले पानी के सहारे अपनी जरूरत पूरी करने के लिए लोगों को रात-रात भर जागना पड़ता है। पिछले दिनों आई एक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के हाड़ौती अंचल में भूजल पाताल तक पहुंच गया है। पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थल है और वहां पानी का संकट नई बात नहीं है। लेकिन हाड़ौती अंचल राजस्थान के जिस दक्षिण-पूर्वी हिस्से में है, उसे सरसब्ज इलाके के तौर पर जाना जाता है। चंबल, कालीसिंध, पार्वती, परवन, आहू, ताकली, उजाड़ जैसी नदियों के अलावा इस अंचल में एक दर्जन छोटी या सहायक नदियां बहती हैं। बरसात के दिनों में जब इन नदियों में उफान आता है, तब इनमें होने वाली पानी की आवक का पता चलता है। इसके बावजूद यदि इलाके में भूजल का स्तर पाताल में पहुंच गया है और लोगों को पानी की पर्याप्त आपूर्ति नहीं हो पा रही है, तो इसका अर्थ केवल यही है कि हम पानी के प्रबंधन में कहीं पिछड़ गए हैं। हाड़ौती एकमात्र उदाहरण भर है, देश के ज्यादातर हिस्सों में जलसंकट की कमोबेश यही कहानी है। महाभारत में कहा गया है-श्अति परिचयाद् अवज्ञा भवति।य सहजता से उपलब्ध हो जाने वाली वस्तुओं के वास्तविक मूल्य का अनुमान हम आसानी से नहीं लगा सकते, भले ही वे जीवन के लिए कितनी ही उपयोगी क्यों न हों। पानी के साथ भी ऐसा ही हुआ है। पृथ्वी की सतह का दो तिहाई हिस्सा पानी से भरा है। इसलिए कई लोगों को लगता है कि जब चारों तरफइतना पानी है, तो फिर चिंता की क्या बात? शायद लोगों का यही सोच है। लेकिन ऐसे लोग इसे भूल जाते हैं कि पृथ्वी की सतह पर मौजूद कुल पानी में से दो प्रतिशत से भी कम मनुष्य के उपयोग लायक है। आज भी पीने के पानी के लिए दुनिया का बड़ा हिस्सा बरसात या नदियों के प्रवाह पर ही निर्भर है। विज्ञान ने हमें भले ही उन्नति के नए सोपान सौंपे हैं, लेकिन आज तक दुनिया की किसी प्रयोगशाला में मनुष्य की जरूरतों को पूरा करने लायक पानी नहीं बनाया जा सका है। इजराइल जैसे देशों ने समुद्री पानी को पीने के योग्य बनाने का दावा किया है, लेकिन उनकी तकनीक या तो इतनी महंगी है या इतनी अप्रचलित है कि दुनिया में यह चलन लोकप्रिय नहीं हो पाया। ऐसे में जरूरी यह था कि हम उन संसाधनों को बचाएं जो हमें साल भर तक पीने का पानी मुहैया कराते हैं।

पिछले दिनों आई एक रिपोर्ट के अनुसार राजस्थान के हाड़ौती अंचल में भूजल पाताल तक पहुंच गया है। पश्चिमी राजस्थान में मरुस्थल है और वहां पानी का संकट नई बात नहीं है। लेकिन हाड़ौती अंचल राजस्थान के जिस दक्षिण-पूर्वी हिस्से में है, उसे सरसब्ज इलाके के तौर पर जाना जाता है। चंबल, कालीसिंध, पार्वती, परवन, आहू, ताकली, उजाड़ जैसी नदियों के अलावा इस अंचल में एक दर्जन छोटी या सहायक नदियां बहती हैं।

नदियों के अलावा झीलों, तालाबों, कुओं, बावडियों, टांकों, जोहड़ों जैसे जल संसाधनों को इस श्रेणी में रखा जा सकता है। पूर्वज जानते थे कि पानी जीवन की सबसे बड़ी जरूरत है और इसके संरक्षण की लापरवाही पीढियों के अस्तित्व को संकट की ओर धकेल सकती है। इसीलिए प्राचीन भारतीय मान्यताओं में किसी जल स्रोत के निर्माण को बहुत पुण्यदायक माना गया। राजाओं, सेठों और सामर्थ्यवान लोगों ने अपने जीवन के किसी महत्त्वपूर्ण अवसर की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए भव्य जल संसाधनों का निर्माण करवाया। भारत की सबसे भव्य बावडियों में एक श्रानी जी की वाव्य गुजरात के अन्हिलवाड़ा पाटन में स्थित है। राजा भीमदेव प्रथम की स्मृति में इस बावड़ी का निर्माण उनकी रानी उदयामति ने करवाया था। यह बावड़ी अब विश्व विरासत में शामिल है। मध्यप्रदेश की राजधानी में स्थित भोपाल के प्रसिद्ध बड़े तालाब का निर्माण परमार राजा

भोज ने 11वीं सदी में एक चर्म रोग से छुटकारा पाने के उपक्रम में करवाया था। युद्ध के दौरान अपनी प्रजा और सेना को शत्रु से बचाए रखने के लिए प्राचीन शासक किलों और दुर्गों में विशेष जलाशय बनवाते थे। चित्तौड़ के विश्व प्रसिद्ध गढ़ में चौरासी जलाशय थे।

राजस्थान की जयसमंद और राजसमंद जैसी विशाल झीलें अपने अपने दौर में अकाल के दौरान लोगों को रोजगार देने की योजना के तहत बनवाई गई थीं। देश के कुछ हिस्सों से ऐसी खबरें सामने आई हैं, जिनमें बताया गया है कि एक छोटा-सा घड़ा पानी भरने के लिए भी स्त्रियों और बच्चों को अपनी जान जोखिम में डाल कर गहरे कुएं में उतरने को मजबूर होना पड़ता है और इस कुएं तक पहुंचने के लिए भी उन्हें अपने घर से बहुत दूर चिलचिलाती धूप में जाना पड़ता है। पानी को लेकर होने वाले संघर्ष ऐसे ही कारणों से उग्र और हिंसक होते हैं। ऐसे में आवश्यक है कि हम पानी के सदुपयोग के और वर्षा जल को संग्रहित करने के महत्व को समझें।

60 वर्ष से अधिक उम्र के यात्रियों के लिए स्वास्थ्य जांच प्रमाण पत्र अनिवार्य करें

-राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने यात्रा व्यवस्थाओं के संबंध में ली बैठक

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य यात्रा व्यवस्थाओं के संबंध में बैठक लेते हुए।

देहरादून (सू.वि.)। राज्य में संचालित चारधाम यात्रा की व्यवस्थाओं के दृष्टिगत सदस्य राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण नई दिल्ली राजेन्द्र सिंह ने नगर निगम सभागार में संबंधित अधिकारियों के साथ बैठक कर यात्रा व्यवस्थाओं की जानकारी के साथ ही अन्य मूलभूत सुविधाओं एवं यात्रियों/पर्यटकों की यात्रा के दौरान राज्य में भारी आमद के मध्यनजर की यात्रा प्रबंधन हेतु बनाए गए प्लान की जानकारी प्राप्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यात्रियों के ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के दौरान जो यात्री 60 वर्ष से अधिक उम्र के हैं उनका स्वास्थ्य जांच प्रमाण पत्र अनिवार्य कर दिया जाए ताकि यात्रियों के मेडिकल इतिहास की जानकारी रहे तथा स्वास्थ्य संबंधी मॉनिटर किया जा सकें। यात्रियों को धार्मिक स्थलों की जानकारी एवं यात्रा के दौरान क्या करें क्या न करें की बुकलेट/पंपलेट बनाकर वितरित करना सुनिश्चित करें।

बैठक में राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य राजेंद्र सिंह ने कहा कि चारधाम यात्रा भारी संख्या में यात्री आ रहे है, इसके लिए शासन-प्रशासन द्वारा अच्छी व्यवस्थाएं बनाई गई है। विगत वर्षों में कोविड संक्रमण के चलते इस वर्ष श्रद्धालुओं/यात्रियों की संख्या अनुमान से अधिक है इसके लिए और व्यवस्थाएं बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड की चारधाम यात्रा में देश एवं विदेश से भारी संख्या में श्रद्धालु आते हैं। ऐसी स्थिति में यह उत्तराखंड राज्य के लिए सुखद स्थिति है, परंतु यात्रियों को सुविधाएं दिया जाना हमारा कर्तव्य है, उन्होंने कहा कि यात्रियों के ठहरने, पेयजल, चिकित्सा सुविधा, स्वच्छता एवं साफ-सफाई, परिवहन की अच्छी व्यवस्था के साथ ही सभी मूलभूत सुविधाएं प्रदान की जाएं। उन्होंने कहा कि ऋषिकेश चारधाम यात्रा का द्वार है, यहाँ पर यात्रियों का अच्छा स्वागत होना एवं धन्यवाद ज्ञापित करना चाहिए, ताकि वे यहां से अच्छी यादे लेकर जाएं। साथ ही जगह जगह पीने का प्याऊ आदि लगाए एवं बेहतर सफाई व्यवस्था बनाई जाए तथा इसका नियमित निरीक्षण किया जाए।

उन्होंने कहा कि यात्रियों के मार्ग दर्शन हेतु संबंधित यात्रा रूटों, ठहरने, चिकित्सा, भौगोलिक एवं जलवायु की स्थिति, स्वास्थ्य सम्बन्धी सुझाव आदि सुविधाओं की जानकारी पम्पलेट के माध्यम से आने वाले प्रत्येक यात्रियों को दी जाएं ताकि यात्रियों को सुविधा रहे। उन्होंने संबंधित अधिकारियों से पूर्व यात्रा के दौरान जो कमियां पाई गयी थी उनकी पुनरावृत्ति न हो इसके लिए बेहतर प्रयास करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अधिकारी स्वयं भी समय-समय पर निरीक्षण करें तथा यात्रा में आने वाले यात्रियों से वार्ता भी करें, ताकि कहीं जो कमी रह गई है उसको पूरा किया जाए। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों से प्रत्येक सप्ताह में एक बार समन्वय बैठक करते हुए समीक्षा करने के भी निर्देश दिए साथ ही विभिन्न स्थानों पर लगे अनाधिकृत होर्डिंग, पोस्टर बैनर हटाने के निर्देश दिए।

मा0 राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सदस्य ने मानसून को दृष्टिगत रखते हुए आपातकालीन स्थिति में आपदा प्रबंधन टीम को भी अलर्ट रखा जाए। साथ ही मानसून से संबंधित अद्यतन स्थिति की जानकारी लेते रहें तथा इसका प्रचार-प्रसार भी करें। उन्होंने कहा कि भीड़ बढ़ने की दशा में स्थानीय संसाधनों का किस प्रकार उपयोग किया जाना है की भी योजना बनाई जाए साथ ही यात्रा रूटों पर 8-9 बड़े प्वांइट तथा 6-7 छोटे प्वांइट चिन्हित करें जहां पर राज्य में अवस्थित सैना, अर्द्धसैनिक बलों एवं एसडीआरएफके जवानों को भी तैनात किया जाए, जिससे यात्रा का बेहतर प्रबंधन के साथ ही संभावित आपदा से निपटा जा सकें। बैठक में अधिशासी निदेशक राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तराखण्ड डॉ0 पीयूष रौतेला अपर जिलाधिकारी पौड़ी गढ़वाल ईला गिरी, नगर मजिस्ट्रेट देहरादून कुशम चौहान, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी देहरादून दिनेश चौहान, तहसीलदार ऋषिकेश अमृत शर्मा, संभागीय सहायक परिवहन अधिकारी ऋषिकेश अरविंद पांडे व मोहित कोठारी, सहायक नगर सहायक आयुक्त ऋषिकेश आनंद सिंह, जिला पूर्ति अधिकारी देहरादून जसवंत सिहं, जिला पर्यटन अधिकारी देहरादून जे.एस चौहान, अधिशासी अभियन्ता विद्युत शक्ति सिंह सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

हिम ज्योति स्कूल और वेनटेज हाल स्कूल ने फुटबॉल के फाइनल में बनाई जगह

-पदक तालिका में पतंजलि गुरुकुलम शीर्ष पर, बलूनी स्कूल और महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कालेज के बीच बराबर की टक्कर

देहरादून (संवाददाता)। ओलम्पिक तर्ज पर देहरादून में पहली बार स्कूली स्तर पर आयोजित की जा रही एसएफए चौम्पियनशिप - उत्तराखंड 2022 के आठवें दिन भी मैडल्स के लिये खिलाड़ियों के बीच जोर अजमाईश देखने को मिली। हरिद्वार स्थित पतांजलि गुरुकुलम 30 स्वर्ण, 33 रजत और 20 कांस्य पदक के साथ मैडल टैली में शीर्ष पर कायम है जबकि दूसरे स्थान पर काबिज सोशल बलूनी पब्लिक स्कूल ने अब तक 24 स्वर्ण और रजत पदक तथा 22 कांस्य पदक अर्जित किये हैं। महाराणा प्रताप स्पोर्ट्स कालेज 24 स्वर्ण, 20 रजत और 12 कांस्य पदक के साथ तीसरे स्थान पर है।

इसी बीच गुरुवार को परेड ग्राउंड मल्टी पर्सस हाल में अंडर 17 कबड्डी मुकाबलों में केन्द्रीय विद्यालय आईआईपी ने द्रोण पब्लिक स्कूल पर 55-47 से जीत दर्ज कर अगले दौर में प्रवेश पाया। एक अन्य मैच में एनकेबी पब्लिक स्कूल ने स्वामी हरिहरानंद पब्लिक स्कूल को एकतरफा मुकाबले में 54-8 से पटखनी दी। लड़कियों के फुटबाल मुकाबलों में अंडर 18 में हिम ज्योति स्कूल ने राजा राम मोहन राय स्कूल से 7-0 से हराकर फाईनल में जगह बनाई। उनका फाईनल मुकाबला अब वेनटेज हाल स्कूल के साथ शुक्रवार को होगा। बैडमिंटन मुकाबलों में अंडर 13 श्रेणी में कैंब्रियन हॉल स्कूल के हितेश बिष्ट ने ख्रिस्त ज्योति एकेडमी के अर्चित रावत को एक रोचक मुकाबले में 21-19 से हराया जबकि एक अन्य मुकाबले में केंद्रीय विद्यालय आईआईपी के रिशांत पुरोहित ने दून इंटरनेशनल स्कूल के ध्रुव कांत को 21-18 से हराया। परेड ग्राउंड में ही आयोजित जूडो में लड़कियों के अंडर 14 में 36 किलो वर्ग में सैपियंस स्कूल की आयुषि रावत ने पेस्ल वीड स्कूल की अक्षिता को हराया जबकि 40 किलो वर्ग में श्रीराम सेंटिनियल स्कूल की तनिष्का पाल ने खुशी नारंग को हरा कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। सैपियंस स्कूल की कृतिका राय ने पेस्ल वीड स्कूल की अवंतिका सिंह को हराकर 44 किलो वर्ग का स्वर्ण पदक जीता।

उत्तराखंड में यूपी से भी अधिक बेरोजगारी

देहरादून (संवाददाता)। उत्तराखंड में यूपी से भी अधिक बेरोजगारी है। उत्तराखंड में बेरोजगारी दर में एक माह में दो फीसदी की बढ़ोतरी हुई। सबसे कम बेरोजगारी की रैंकिंग में उत्तराखंड टॉप-10 से बाहर होकर 7वें से 12वें स्थान पर पहुंच गया है। सेंटर फॉर मॉनीटरिंग इंडियन इकोनॉमी (सीएमआईई) की रिपोर्ट में यह खुलासा हुआ है।

इस रिपोर्ट के अनुसार, उत्तराखंड में मार्च में 3.5 बेरोजगारी दर थी, जो अप्रैल में 5.3 फीसदी हो गई है। उत्तर प्रदेश में बेरोजगारी दर 2.9 फीसदी है, जो उत्तराखंड से काफी कम है। मार्च में यूपी में 4.4 फीसदी दर थी।

डिप्टी कलक्टर यात्रा मजिस्ट्रेट नियुक्त

देहरादून (संवाददाता)। जिलाधिकारी डा. आर राजेश कुमार ने चारधाम यात्रा के प्रारम्भ होने के फलस्वरूप ऋषिकेश में यात्रा सम्बन्धी वाहनों को निर्धारित समय के पश्चात आवागमन से प्रतिबन्धित रखने तथा इन वाहनों में क्षमता के अनुरूप ही सवारियों की सुनिश्चिता एवं होटलों, विश्राम/ अतिथि गृहों के बाहर रेट लिस्ट चस्पा किये जाने की अनिवार्यता तथा यात्रियों/पर्यटकों की सुगमता के लिए सम्बन्धित विभागों से उत्कृष्ट समन्वय बनाये रखने हेतु डिप्टी कलक्टर/विशेष भूमि अध्याप्ति अधिकारी देहरादून शैलेन्द्र सिंह नेगी को यात्रा मजिस्ट्रेट/नोडल अधिकारी नामित किया गया है। जिलाधिकारी ने अवगत कराया कि नामित किये गए यात्रा मजिस्टेऊट/नोडल अधिकारी को शैलेन्द्र सिंह नेगी को ऋषिकेश में नियमित रूप से अपना कैम्प व रात्रि प्रवास बनाये रखने के निर्देश दिए। इस निमितत यात्रा मजिस्टेऊट को यात्रा अवधि के दौरान वह सभी अधिकार प्रदत्त होंगे जो उप जिला मजिस्टेऊट में निहित है। उन्होनें यात्रा से सम्बन्धित क्षेत्रीय विभागीय अधिकारियों यथा परिवहन, पर्यटन, खाद्य सुरक्षा, पुलिस, राजस्व, नगर निगम, जिला पंचायत, विद्युत, जल संस्थान, जल निगम, स्वास्थ्य, दूरसंचार, लोक निर्माण विभाग, राष्ट्रीय राजमार्ग, डीजीबीाअर, सुलभ इन्टरनेशनल सोशल सर्विस अदि विभागों एवं संस्थाओं के अधिकारियों यात्रा मजिस्टेऊट से समन्वय बनाने के निर्देश दिए।

हेल्पलाइन में मदद कर रहा है ट्रूकॉलर

देहरादून (संवाददाता)। महिलाओं की घरेलू हिंसा, उत्पीड़न के मामलों में मददगार बना ट्रूकॉलर एप यह जानकारी देते हुए ट्रूकॉलर इंडिया की पब्लिक अफेयर्स डायरेक्टर, प्रज्ञा मिश्रा ने बताया कि टूकॉलर ऐप में 181 महिला हेल्पलाइन क्रिक डायल फीचर को शामिल किए जाने के बाद से दिल्ली महिला आयोग की हेल्पलाइन नंबर 181 पर आने वाले फोन कॉल में 200 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। इस वर्ष मार्च के महीने से, टूकॉलर ने अपने डायलर पर महिला सुरक्षा हेल्पलाइन नंबर 181 को प्रदर्शित करना शुरू कर दिया है, जो कंपनी की ओर महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ होने वाले अपराधों के खिलाफशुरू की गई मुहिम का एक हिस्सा है।

ऑनलाइन मोड के माध्यम से छात्रवृत्ति परीक्षा आयोजित करेगा विद्यामंदिर क्लासेज

देहरादून (संवाददाता)। जेईई और नीट की तैयारी कराने वाली अग्रणी संस्था विद्यामंदिर क्लासेज (वीएमसी) अपना नेशनल एडमिशन टेस्ट (एनएटी) 21, 22, 29 मई को ऑनलाइन मोड से आयोजित कराने जा रही है। यह ऑनलाइन परीक्षा जेईई और नीट उम्मीदवारों को उनकी तैयारी यात्रा के दौरान मेंटरशिप, मुफ्त संदेह समाधान और हैंड होल्डिंग सपोर्ट के साथ एक बड़ा बढ़ावा प्रदान करेगी। यह टेस्ट छठी से लेकर बारहवीं कक्षा तक के छात्रों को विद्यामंदिर क्लासेज के शुरू होने वाले बैचों के विभिन्न कोर्सों के साथ जुड़ने का अवसर देगी और साथ ही उन्हें 100 फीसदी तक छात्रवृत्ति पाने का भी मौका मिल सकता है। विद्यामंदिर क्लासेज के एकेडमिक डायरेक्टर सौरभ कुमार ने कहा कि वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान की ठोस बुनियाद पर बनी और विद्यामंदिर क्लासेज के लिए प्रतिस्पर्धी और प्रोत्साहित इंजीनियरों तथा डॉक्टरों को तैयार करना ही प्राथमिक लक्ष्य है। इस ऑनलाइन नेशनल एडमिशन टेस्ट का मकसद छात्रों को सभी तरह के फायदों के साथ चालू सत्र में दाखिला सुनिश्चित लेने का आखिरी मौका देना है ताकि वे कोर्स के कठिन पाठों को आसानी से समझ सकें। हमारे ये कोर्स छात्रों को फिजिक्स, केमेस्ट्री और मैथमेटिक्स व बायोलॉजी के मौलिक कॉन्सेप्ट्स समझने में सक्षम बनाएंगे और बेसिक कॉन्सेप्ट्स पर आधारित जटिल और पेचीदा सवालों को रचनात्मक तरीके से हल करने में सक्षम बनाते हुए उनकी विश्लेषणात्मक दक्षताओं तथा सोचने की समानांतर प्रक्रिया को निखारेंगे। वीएमसी का नेशनल एडमिशन टेस्ट छठी से लेकर 12वीं तक के छात्रों को न सिर्फ शुरुआती चरण के लाभ देगा, बल्कि उन्हें ठोस बुनियाद बनाने में भी मदद करेगा जिससे उन्हें आईआईटी-जेईई (मेन एवं एडवांस्ड), नीट, एनटीएसई, केवीपीवाई और ओलंपियाड जैसी विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल होने का अतिरिक्त लाभ मिलेगा। यहां शुरुआती चरण से प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए बेहतरीन शिक्षकों और समग्र शिक्षण पद्धति की मदद से तैयारी कराने की सुविधा मिलने से छात्र छात्रवृत्ति व प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए पूरी तरह तैयार हो पाएंगे।

क्राइसिस कम्यूनिकेशन एण्ड बिल्डिंग ट्रस्ट विषय पर कार्यशाला आयोजित

ऋषिकेश (संवाददाता)। टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड और पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफ इंडिया देहरादून चौप्टर के सहयोग टिहरी कार्यालय में क्राइसिस कम्यूनिकेशन एण्ड बिल्डिंग ट्रस्ट विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ अजित पाठक, राष्ट्रीय अध्यक्ष, पब्लिक रिलेशन्स सोसाइटी ऑफइंडिया ने उपरोक्त विषय पर अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर यू. के. सक्सेना, कार्यपालक निदेशक (टिहरी कॉम्प्लेक्स) ने डॉ पाठक के साथ मंच साझा करते हुए कार्यशाला में अपने विचार साझा किए।

डॉ ए. एन. त्रिपाठी, अपर महाप्रबंधक (सं एवं जनसम्पर्क) ने इस अवसर पर स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत किया। कार्यशाला में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के टिहरी परियोजना में कार्यरत उच्च अधिकारियों ने भाग लिया। मेंच का संचालन गौरव कुमार, प्रबन्धक जनसम्पर्क, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड द्वारा किया गया। टीएचडीसीआईएल भारत की अग्रणी विद्युत उत्पादन कंपनियों में से एक है। टिहरी बांध एवं एचपीपी (1000 मेगावाट), कोटेश्वर एचईपी(400 मेगावाट), गुजरात के पाटन में 50 मेगावाट एवं द्वारका में 63 मेगावाट की पवन विद्युत परियोजनाओं, उत्तर प्रदेश के झांसी में 24 मेगावाट की ढुकवां लघु जल विद्युत परियोजना एवं कासरगॉड केरल में 50 मेगावाट की सौर परियोजना के साथ टीएचडीसीआईएल की कुल संस्थापित क्षमता 1587 मेगावाट हो गई है।

भद्रराज मेले के लिए राजकीय मेले की अनुदान राशि प्रदान की जाएगी: सीएम

-सीएम ने भद्रराज मंदिर में आयोजित मेले में प्रतिभाग किया

देहरादून (सू. वि.)। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने शनिवार को भद्रराज देवता के मंदिर में पूजा कर प्रदेश की सुख एवं समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने भद्रराज मंदिर में आयोजित मेले में भी प्रतिभाग किया। मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि भद्रराज मेले के लिए राजकीय मेले की अनुदान राशि प्रदान की जाएगी। दुधली-डिगोली मोटर मार्ग के डामरीकरण के लिए इसी वित्तीय वर्ष में धनराशि स्वीकृति की जाएगी। भद्रराज मंदिर में पेयजल एवं विद्युत की व्यवस्थाओं को प्राथमिकता में रखा जायेगा। मुख्यमंत्री ने कहा की इस क्षेत्र की विभिन्न मांगों का परीक्षण कर उचित समाधान किया जायेगा।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि पहले मेले मिलन के केंद्र होते थे। आज ज्ञान और विज्ञान की प्रगति से हर सुविधा आसानी से मिल जाती हैं, लेकिन हमें अपनी पुरानी संस्कृति और परम्पराओं को बचाए रखना होगा। उन्होंने कहा कि ऐसे स्थान हमारी संस्कृति, अध्यात्म एवं परम्पराओं को मजबूत करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड आध्यात्म और पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण राज्य है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य में हर क्षेत्र में कार्य हो रहे हैं। केदारनाथ में अनेक पुनर्निर्माण के कार्य हुए है। चारधाम यात्रा के लिए श्रद्धालुओं की सुविधाओं के लिए हर संभव सुविधा प्रदान करने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखण्ड को देश का सर्वश्रेष्ठ राज्य बनाने के लिए राज्य सरकार कृत संकल्पित है। राज्य की विकास यात्रा को सबके सहयोग से आगे बढ़ाया जाएगा।

भद्रराज मंदिर में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते सीएम।

राज्य सरकार सभी वर्गों के हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य कर रही है। कोरोना काल में हर वर्ग को राहत देने का प्रयास राज्य सरकार द्वारा किया गया। 184000 अंत्योदय कार्ड धारकों को साल में तीन सिलेंडर मुफ्त दिए जायेंगे। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी, मसूरी के नगर पालिका अध्यक्ष अनुज गुप्ता, पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष मसूरी मन्नू मल्ल, ओपी उनियाल, भद्रराज मंदिर समिति के अध्यक्ष राजेश नौटियाल, उपाध्यक्ष बलवंत सिंह तोमर, सचिव शिवराज सिंह तोमर आदि उपस्थित थे।

विभिन्न न्यायालयों में राष्ट्रीय लोक अदालत का हुआ आयोजन

देहरादून (संवाददाता)। प्रभारी सचिव व सिविल जज (सी0डि0), जिला विधिक सेवा प्राधिकरण देहरादून ने अवगत कराया कि राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण, नई दिल्ली के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, देहरादून के तत्वावधान में 14 मई को प्रात: 10.00 बजे से सायं 05.00 बजे तक जनपद के देहरादून, ऋषिकेश, विकासनगर, डोईवाला एवं चकराता, न्यायालयों में राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया गया। इस लोक अदालत में मोटर दुर्घटना क्लेम, सिविल मामले, पारिवारिक मामलें, चौक बाउन्स से सम्बंधित मामलें व अन्य अपराधिक मामलें, जिनमे समझौता किया जा सकता था, वह सभी इस लोक अदालत में लगाये गये थे। लोक अदालत में संदर्भित मामलों के निस्तारण हेतु 16 पीठों का गठन किया गया था। लोक अदालत में कुल 976 के मुकदमों का निस्तारण किया गया तथा 3,73,53,635/- रू0 धनराशि पर समझौता हुआ।

अवैध खनन, परिवहन एवं भंडारण पर नियमित छापेमारी करने के डीएम ने निर्देश

देहरादून (सू. वि.)। जिलाधिकारी डॉ0 आर राजेश कुमार द्वारा सभी उप जिलाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रान्तर्गत अवैध खनन पर प्रतिबंध लगाने खनन कड़ी कार्यवाही करने तथा अवैध, अवैध परिवहन एवं भंडारण पर नियमित छापेमारी की कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए है।

जिलाधिकारी के निर्देशों के अनुपालन में उप जिलाधिकारी विकासनगर सौरभ असवाल के नेतृत्व में राजस्व विभाग की टीम ने विकासनगर क्षेत्रान्तर्गत अवैध खनन के परिवहन करते वाहनों पर छापेमारी की कार्यवाही की गई। 9 वाहन सीज किये गये जिनमें 7डम्पर और 2 टेऊक्टर शामिल है। टीम द्वारा 3 वाहनों को हिमाचल की ओर व 3 वाहन लांघा रोड़ 2 झाझरा में तथा 1 वाहन सेलाकुई में पकड़ा गया। सभी वाहनों को थानों एवं तहसील परिसर में खड़ा किया गया है जिन पर अर्थदण्ड की कार्यवाही गतिमान है। इसी प्रकार अन्य वाहन खनन सामग्री निर्धारित रूप के विपरीत परिवहन करते पाए जाने पर वाहन को सामग्री सहित सीज करते हुए निर्धारित सामग्री का दुगुना लगभग 5 लाख का अर्थदंड लगाया गया है।

टीम में तहसीलदार विकासनगर, जिला खान अधिकारी वीरेन्द्र कुमार सहित राजस्व विभाग के कार्मिक शामिल रहे। जिलाधिकारी डॉ आर राजेश कुमार ने अवगत कराया कि जनपद में अवैध खनन, खनन के अवैध परिवहन एवं भण्डारण पर नियमित कार्यवाही करने के निर्देश दिए गए है तथा भविष्य मे इस प्रकार की कार्यवाही गतिमान रहेगी।

बोर्ड गवर्नर बैठक की अध्यक्षता करते तकनीकी शिक्षा मंत्री सुबोध उनियाल।

जी.बी.पन्त इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग में रजिस्ट्रार की नियुक्ति को निरस्त किया

देहरादून (सू. वि.)। विधानसभा में जी.बी.पन्त इन्स्टीट्यूट ऑफ इन्जीनियरिंग, टेक्नालॉजी बोर्ड गवर्नर (बीओजी) बैठक की अध्यक्षता तकनीकी शिक्षा मंत्री सुबोध उनियाल ने की। बोर्ड बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि पूर्व में रजिस्ट्रार की नियुक्ति निराधार है अत: नियुक्ति को निरस्त किया जाता है।

इसके अतिरिक्त उच्च न्यायालय के वर्ष 2009 से सम्बन्धित मामलों के अनुपालन हेतु एक कमेटी का गठन किया गया है, इसकी रिपोर्ट अगली बोर्ड बैठक में रखी जायेगी।

एक अन्य निर्णय के तहत इन्स्टीट्यूट के कार्यवाहक निदेशक पर कार्यवाही सम्बन्धी जिलाधिकारी की रिपोर्ट की समीक्षा अगली बैठक में रखी जायेगी।

कार्मिकों सम्बन्धी मामले में कैरियर एडवान्समेंट स्कीम के तहत पदोन्नति व ग्रेड पे वृद्धि की जायेगी तथा बैठक में स्वैच्छिक सेवानिवृति के प्रस्ताव को स्वीकार किया गया है।

कैबिनेट मंत्री सुबोध उनियाल ने कहा कि प्रभारी व्यवस्था को समाप्त करके निदेशक के पूर्णकालिक नियुक्ति प्रक्रिया का पालन किया जायेगा। उन्होंने कहा कि विभिन्न इन्जीनियरिंग कॉलेज के अलग अलग नियमों को एक अधिनियम के तहत लाया जायेगा। इससे पर्यवेक्षण करने में मदद मिलेगी और पारदर्शी व्यवस्था सुनिश्चित होगी। बैठक में सचिव तकनीकी शिक्षा एवं बोर्ड के उपाध्यक्ष रविनाथ रमन, बोर्ड के सदस्य सचिव एवं निदेशक डॉ0 वाई सिंह, निदेशक प्राविधिक शिक्षा हरि सिंह, संयुक्त सचिव संजय टोलिया इत्यादि उपस्थित थे।

कबड्डी में लड़कों का खिताब एनकेबी पब्लिक स्कूल व लड़कियों का टाइटल पतंजलि गुरुकुलम ने हासिल किया

देहरादून (संवाददाता)। ओलंपिक की तर्ज पर देहरादून में स्कूली स्तर पर पहली बार आयोतित किये गये एसएफए चौम्प्यिनशिप-उत्तराखंड 2022 में दसवे दिन भी कड़े मुकाबले देखने को मिले जबकि रविवार को अंतिम दिन अधिकांश फाईनल मुकाबले आयोजित किये जायेंगें। शनिवार को नैनीताल स्थित एनकेबी पब्लिक स्कूल ने अंडर 17 में लडकों को कबड्डी खिताब अपने नाम किये । परेड ग्राउंड मल्टी पर्सस हाल में आयोजित इस मुकाबले में एनकेबी ने जमदग्नि पब्लिक स्कूल की बी टीम को 42-31 से हराया। तीसरे स्थान के लिये जमदग्नि पब्लिक स्कूल टीम ए ने श्री गुरु राम राय पब्लिक स्कूल, भनियावाला को 46-36 से हराया।

लड़कियों के अंडर 17 कबड्डी मुकाबले में हरिद्वार स्थित पतंजलि गुरुकुलम ने सत्येश्वरी देवी मैमोरियल पब्लिक स्कूल को 51-41 से हराया। कांस्य पदक के लिये सेपियंस स्कूल, विकासनगर ने स्वामी हरिहरानंद पब्लिक स्कूल को 53-24 से हराया। वहीं दूसरी ओर पैव्हिलियन ग्राउंड में आयोजित अंडर 16 फुटबाल मुकाबलों के क्वार्टर फाईनल मैच में दून पब्लिक स्कूल ने कैंबरियन हाल स्कूल को 3-0 से हराया जिसमें शुभम ने दो गोल दागे। लड़कियों की अंडर 18 खो खो प्रतिस्पर्धा में ग्रीन लान ऐकेडमी ने सिद्धार्थ पब्लिक स्कूल को रोचक मुकाबले में 18-16 से मात दी। इसके बाद, निर्मल आश्रम दीपमाला पब्लिक स्कूल में अंतिम क्षणों में पारस पब्लिक स्कूल, श्यामपुर को 24-23 से हराया।

प्रतियोगिता के विजेता।

इसी बीच अंडर 13 बैडमिंटन क्वार्टर फाइनल के एक मैच में कॉन्वेंट ऑफजीसस एंड मैरी स्केल की शावनी ने देहरादून वर्ल्ड स्कूल की कनिष्का नेगी को रोचक मुकाबले में 21-20 से हराया। जबकि अंडर 19 लड़कियों के ही एक अन्य क्वार्टरफाईनल मुकाबले में निर्मल आश्रम दीपमाला पब्लिक स्कूल की भुवी त्यागी ने अगापे मिशन स्कूल की आयुषि बिष्ट को 21-18 के हराया।

अंडर 11 के बैडमिंटन सेमीफाइनल मुकाबले में दिल्ली पब्लिक स्कूल की अवनी मखलोगा ने टच वर्ल्ड स्कूल की अनवेशा सकलानी को 21-19, 23-25 और 21-13 से हराकर फाईनल में प्रवेश किया। रविवार को चौम्पियनशिप के समापन से पूर्व बैडमिंटन, वॉलीबॉल, शतरंज, फुटबॉल और खो खो के फाइनल मैच देखने को मिलेंगें।

सुरकंडा देवी मंदिर में भगवती जागरण व भंडारा 8 जून को

देहरादून (संवाददाता)। नमस्कार देवभूमि सेवा संघ दिल्ली की ओर से 8 जून को सिद्ध शक्तिपीठ सुरकंडा देवी मंदिर में मां भगवती जागरण व भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

भगवती जागरण में भक्त बड़ी संख्या में प्रतिभाग करेंगे। नमस्कार देवभूमि सेवा संघ दिल्ली की ओर से हर वर्ष सुरकंडा मंदिर में गंगा दशहरे के मौके पर मां भगवती जागरण व भंडारे का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष मां भगवती जागरण 8 जून को होगा।

स्वामी मुद्रक, प्रकाशक मोहन राजा द्वारा आर. के. प्रिन्टर्स 43/1, धर्मपुर माता मन्दिर रोड़, देहरादून, उत्तराखण्ड से मुद्रित कराकर 95 बी शुभम विहार, गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया

सम्पादक

मोहन राजा

फोन नं0- 01334-212184

Mob- 9997426600

कानूनी सलाहकार

एडवोकेट : के. पी. सिंह (देहरादून)

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून होगा

e-mail

kkalamkasauda@yahoo.in